CHETANA
INTERNATIONAL JOURNAL OF EDUCATION (CIJE)
Peer Reviewed/Refereed Journal
(ISSN: 2455-8729 (E) / 2231-3613 (P))
Impact Factor
SJIF 2023 - 7.286

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

First draft received: 12.06.2023, Reviewed: 18.06.2023, Accepted: 26.06.2023, Final proof received: 30.06.2023

ग्रामीण क्षेत्र व शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के बालकों व बालिकाओं में निर्णय क्षमता का अध्ययन करना

लक्ष्मण लाल मीना एवं ममता गायरी
सहायक प्राध्यापक
एमवीएम टीचर ट्रेनिंग कॉलेज, प्रतापगढ़, राजस्थान
Email - mamtagayri1232@gmail.com, Mob.-8290547153

सारांश

शिक्षा मनुष्य के सामान्य व्यवहार के साथसाथ विशिष्ट व्यवहार को भी सर्वोत्तम ढंग से सम्पादित करती है। शिक्षा के - अभाव में मनुष्य नाममात्र का रह जाता है। मनुष्य की वास्तविक पहचान शिक्षा द्वारा ही सम्भव है। शिक्षा ही मनुष्य के मानसिक, नैतिक, आध्यात्मिक, बौद्धिक विकास में प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रुप से सहायक होती है। मनुष्य जिज्ञासु है, पर उसकी जिज्ञासापूर्ण उम्मीदों को वास्तविकता का रुप देने में शिक्षा का योगदान रहा है। शिक्षा एक ऐसा सूरज है जो मनुष्य को प्रकाशमान करता है और इससे प्रवर्तित किरण परिवार, समाज, देश के साथ पूरी दूनिया को चमकाती है। शिक्षा मनुष्य का एक ऐसा इत्र है जो अपनी खुशबू से पुरे समाज को सुगन्धित करती है। शिक्षा हमें जीवन जीने की कला सिखलाती है। तथा मनुष्य में सद्चरित्र का निर्माण करती है।

मुख्य शब्द : *मानवाधिकार, जीवन-दर्शन, समाज व्यवस्था आदि.*

प्रस्तावना

शिक्षा मनुष्य के सामान्य व्यवहार के साथसाथ विशिष्ट व्यवहार को - भी सर्वोत्तम ढंग से सम्पादित करती है। शिक्षा के अभाव में मनुष्य नाम मात्र का रह जाता है। मनुष्य की वास्तविक पहचान शिक्षा द्वारा ही सम्भव है। शिक्षा हीमनुष्य के मानसिक, नैतिक, आध्यात्मिक, बौद्धिक विकास में प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रुप से सहायक होती है। मनुष्य जिज्ञासु है, पर उसकी जिज्ञासापूर्ण उम्मीदों को वास्तविकता का रुप देने में शिक्षा का योगदान रहा है। शिक्षा एक ऐसा सूरज है जो मनुष्य को प्रकाशमान करता है और इससे प्रवर्तित किरणंे परिवार, समाज, देश के साथ पूरी दूनिया को चमकाती है। शिक्षा मनुष्य का एक ऐसा इत्र है जो अपनी खुशबू से पुरे समाज को सुगन्धित करती है। शिक्षा हमें जीवन जीने की कला सिखलाती है। तथा मनुष्य में सद्चरित्र का निर्माण करती है।

निर्णय क्षमता

मनुष्य का जीवन संघर्षमय जीवन होता है। उसके जीवन में अनेक पड़ाव ऐसे आते है कि उसके समक्ष एक से अधिक विकल्प होते है। उन विकल्पों में से उसे किसी एक का चुनाव करना होता है। जीवन में सफलता प्राप्त करने हेतु सही समय पर सही विकल्प का चुनाव करना व सही निर्णय करना आवश्यक है क्योंकि सफलता का निर्णय क्षमता से सीधा सम्बन्ध होता है। निर्णय की संकल्पना को कुछ व्यापक आयाम देने के लिए इन विशिष्ट शब्दों का प्रयोग कर सकते है। जैसे समायोजन, समझोता, व्यवस्था, चयन, मध्यमार्ग, निश्चय, प्राथमिकता, उपशमन, परिणाम, अभिनिर्णय आदि। एक संज्ञानात्मक परिप्रेक्ष्य की दृष्टि से निर्णय प्रक्रिया एक अविच्छिन्न प्रक्रिया है जो वातावरण के साथ अन्योन्यक्रिया करने में संघठित होती हैं। यदि हम दार्शनिक परिप्रेक्ष्य की दृष्टि से देखें तो निर्णय हमें इस योग्य बनाता है कि हम अपने अस्तित्व का अनुभव कर सके और अपने आत्मन तथा परिवेश जिसमे हम रहते हैं, के उत्तरदायित्व को भी अनुभव कर सकें।

निर्णयन एक निरन्तर चलने वाली मानसिक प्रक्रिया है जिसके अन्तर्गत निर्णयकर्ता विभिन्न विकल्पों पर विचार करने के पश्चात् सही विकल्प का चयन करता हैं। अतः कहा जा सकता है कि निर्णयन विद्यार्थियों में स्वतंत्रतापूर्वक स्वयं के प्रयास से सीखने की आदत विकसित करता है साथ ही ऐसी क्षमता विकसित करता है कि वे स्वयं ही सही निर्णय लेने में सक्षम हो सके।

निर्णय क्षमता की परिभाषाएँ

जार्ज हैटी के अनुसार- 'निर्णयन मापदण्डों पर आधारित दो या दो से अधिक संभावित विकल्पों में से किसी एक विकल्प का चयन है।'

हर्बर्ट साइमन के अनुसार- "निर्णयन के अन्तर्गत तीन प्रमुख अवस्थाएँ होती हैकार्य करने के अवसरों का पता लगाना -, कार्य करने के सम्भावित क्रमों का पता लगाना, कार्य करने के सम्भावित क्रमों में से चयन करना।"

जीशैकेल के अनुसार .एस .एल ., "निर्णय लेना रचनात्मक मानसिक क्रिया का वह केन्द्र बिन्दु होता है जहाँ ज्ञान, विचार भावना तथा कल्पना कार्यपूर्ति हेतु एकत्रित किये जाते हैं।"

अध्ययन का औचित्य

विद्यालय में अध्ययनरत सभी विद्यार्थियों को समान वातावरण उपलब्ध होता है पर फिर भी उनकी निर्णय क्षमता व समायोजन क्षमता में भिन्नता रहती है। अर्थात् विद्यालय के वातावरण के अलावा बालक के व्यक्तित्व को सामाजिक तथा पारिवारिक वातावरण भी प्रभावित करते हैं। जीवन में सफलता को लेकर पारिवारिक व सामाजिक दबाव को देखते हुये बालक मानसिक तनाव का शिकार हो जाता है। शिक्षा का प्रमुख कार्य समाज में क्रियात्मक व रचनात्मक कार्यों की प्रवृत्ति विकसित करना है तथा शिक्षा द्वारा ही बालकों में व्यक्तित्व का विकास होता है। अतः विद्यालय व परिवार इन तथ्यों को भलीभांती समझते हुए विद्यालय में शिक्षा प्रक्रिया व पाठ्य सहगामी - क्रियाओं द्वारा उनके लिये उचित वातवरण का निर्माण करे। उनमें निर्णय क्षमता व समायोजन क्षमता का विकास करे व अनावश्यक मानसिक तनाव से उन्हें दूर रखे, तभी विद्यार्थी अपने जीवन में सफलता प्राप्त करने में सक्षम हो सकेगा। सफलता एवं निर्णय क्षमता के बीच निकट का रिश्ता है आपका सही निर्णय ही आपकी सफलता का मार्ग प्रशस्त करता है। अधिकतर लोगों के जीवन में असफलता का मुख्य कारण होता है, उनका ठीक समय पर निर्णय नहीं ले पाना।

संबंधित पूर्व शोध

सक्सेना 1, एम(1980) . ने बच्चों की निर्णय क्षमता एवं समस्या समाधान व्युह रचनाओं के अध्ययन विषय को शोध हेतु लिया गया व प्राप्त परिणाम इस प्रकार है

किशोरावस्था के बालकों में निर्णय क्षमता की व्युत्पत्ति स्वतः तब (1) उत्पन्न होती है, जब वह किसी समस्या एवं उसके समाधान की स्थिति में होते हैं।

किशोर बालकों में निर्णय क्षमता का स्तर (2), बालिकाओं की अपेक्षा अधिक पाया गया।

समस्या कथन

"ग्रामीण क्षेत्र एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में निर्णय क्षमता व समायोजन क्षमता के मध्य सहसंबंध का अध्ययन - करना।"

अध्ययन के उद्देश्य

मनुष्य द्वारा किये गये प्रत्येक कार्य के पीछे कोई ना कोई उद्देश्य अवश्य होता है। उद्देश्य के अभाव में किया गया कार्य अंधेरे में तीर चलाने के समान है अर्थात दिशाहीन होता है। उद्देश्य कार्य का वह अन्तिम बिन्दू होता है जिसे प्राप्त करने का सतत् प्रयास किया जाता है। किसी भी शोध की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि विषयान्तर्गत अध्ययन हेतु उद्देश्यों को सटीक किया गया है ताकि समस्या का निष्कर्ष उद्देश्यों के अनुरूप ज्ञात किया जा सके।

1.ग्रामिण क्षेत्र व शहरी क्षेत्र के बालको में निर्णय क्षमता का अध्ययन करना।

2. ग्रामिण क्षेत्र व शहरी क्षेत्र के बालिकाओ में निर्णय क्षमता का अध्ययन करना।

न्यादर्श

शिक्षा के क्षेत्र में शोध अध्ययनों की आवश्यकता देखते हुये प्रस्तुत शोध में मध्यप्रदेश के मंदसौर जिले का चयन किया गया है। मंदसौर जिले के अन्तगत ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के कक्षा 9 वीं तथा 10 वीं के विद्यार्थियों को न्यादर्श में सम्मिलित किया जायेगा। शोधकर्ता द्वारा यादृच्छिक रूप से चयनित मंदसौर जिले के ग्रामीण क्षेत्र के 10 व शहरी क्षेत्र के 10 विद्यालयों का चयन किया जायेगा। तथा प्रत्येक विद्यालय से 15-15 विद्यार्थी लिये जायंगे अतः कुल 300 विद्यार्थियों का चयन न्यादर्श के रूप में किया जायेगा।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण

एक सफल शोध के लिए उपयुक्त उपकरण का उपयोग बहुत महत्वपूर्ण है। वर्तमान में शोध हेतु अनेक उपकरण हैं विभिन्न उपकरण विभिन्न प्रकार के प्रदत्तों को एकत्रित करने के लिए उपयोग में लिए जाते हैं। शोध संबंधी विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता द्वारा निम्न उपकरणों का प्रयोग किया गया।

तकनीकी शब्दों की व्याख्या

शोध समस्या में प्रयुक्त किये जाने वाले तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण करना आवश्यक होता हैं क्योंकि एक शब्द को अनेक अर्थों में परिभाषित किया जा सकता है। प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त तकनीकी शब्दावली का स्पष्टिकरण निम्न है।

ग्रामीण क्षेत्र

ग्रामीण क्षेत्र सामान्यतया उस भौगोलिक क्षेत्र के लिए प्रयुक्त होता है जो नगरों व कस्बों से बाहर होता है। यह छोटीछोटी मानव बस्तियाँ - है। है जहाँ की जनसंख्या कुछ सौ से लेकर कुछ हजार के बीच होती यहां शहरी क्षेत्र की अपेक्षा शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार आदि सुविधाओं की कमी होती है।

शहरी क्षेत्र

वे क्षेत्र जिनकी जनसंख्या उनके आसपास के क्षेत्र से अधिक होती है व मानवीय सुविधाएं प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होती है शहरी क्षेत्र कहलाता है। शहरी क्षेत्र में नगरों, कस्बों, या उपनगरों को सम्मिलित किया जाता है।

माध्यमिक स्तर

माध्यमिक शिक्षा, प्राथमिक शिक्षा व उच्च शिक्षा के बीच की एक महत्वपूर्ण कड़ी है जहाँ प्राथमिक शिक्षा ज्ञान के द्वार की कुंजी है वहीं माध्यमिक शिक्षा जीवनयापन के गुण सिखाती है। प्राथमिक शिक्षा व उच्च शिक्षा के मध्य साल के बच्चों को दी जाने वाली शिक्षा 15 व 14 वीं 9 माध्यमिक शिक्षा कहलाती है। माध्यमिक शिक्षा के अन्तर्गत कक्षा वीं की कक्षाएँ आती है।10 व

विद्यार्थी

विद्यार्थी शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है। विद्याअर्थी, जिसका अर्थ विद्या प्राप्त करने वाला। अर्थात वह व्यक्ति जिसका लक्ष्य ज्ञान प्राप्त करना हो।

निर्णय क्षमता

निर्णय क्षमता व्यक्ति में निहित वह क्षमता है जिससे वह विभिन्न विकल्पों में से सही विकल्प का चयन कर सके। अर्थात निर्णय लेना एक चयन प्रक्रिया है। जीवन में सफलता प्राप्त करने हेतु सही समय पर सही विकल्प का चुनाव करना व सही निर्णय करना आवश्यक है। क्योंकि सफलता का निर्णय क्षमता से सीधा सम्बन्ध होता है।

अध्ययन में प्रयुक्त शोध विधि

प्रत्येक अनुसंधानकर्ता को अधिक विश्वसनीय एवं ठोस परिणामों की प्राप्ति हेतु कतिपय विधियों का चयन करना होता है। शैक्षिक समस्याओं हेतु सर्वेक्षण विधि सर्वाधिक रूप से प्रयोग की जाने वाली विधि है। प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता द्वारा **"सर्वेक्षण विधि"** का प्रयोग किया गया।

परिणाम एवँ विश्लेषण

उक्त उद्देश्य के अन्तर्गत ग्रामीण क्षेत्र व शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर की बालकों तथा ग्रामीण क्षेत्र व शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर की बालिकाओं में निर्णय क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन किया है शोध से प्राप्त प्रदत्तों का मध्यमान, प्रमाप विचलन व टी मुल्य निम्न सारणी में दिये गये हैं।

ग्रामीण क्षेत्र व शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के बालकों व बालिकाओं की निर्णय क्षमता में सार्थकता का अन्तर

क्र.स	चर	N	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी मुल्य	सार्थकता परिक्षण
1	ग्रामिण क्षेत्र व शहरी क्षेत्र के बालको में निर्णय क्षमता	160	19.31	3.27	0.1616	0.01 के सार्थकता स्तर पर मान 1.288
2	ग्रामिण क्षेत्र व शहरी क्षेत्र के बालिकाओ में निर्णय क्षमता	140	19.22	3.48		0.05 के सार्थकता स्तर पर मान 0.98

विश्लेषण

प्रस्तुत सारणी में ग्रामीण क्षेत्र व शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के बालकों व बालिकाओं में निर्णय क्षमता के अन्तर की सार्थकता का परीक्षण किया गया है। ग्रामीण क्षेत्र व शहरी क्षेत्र के बालकों में निर्णय क्षमता का मध्यमान 19.31व ग्रामीण क्षेत्र व शहरी क्षेत्र के बालिकाओं में निर्णय क्षमता का मध्यमान 19.22 प्राप्त हुआ है व ग्रामीण क्षेत्र व शहरी क्षेत्र के बालकों में प्रमाप विचलन 3.27 व ग्रामीण क्षेत्र व शहरी क्षेत्र के बालिकाओं का प्रमाप विचलन 3.48 प्राप्त हुए हैं। प्रदत्तों से प्राप्त टी का मान 0.1616 है जो टी सारणी के 0.01 के सार्थकता स्तर के सारणी मूल्य 1.288 से कम है। व 0.05 के सार्थकता स्तर के सारणी मूल्य 0.98 से भी कम है।

ग्रामीण क्षेत्र व शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के बालकों में ग्रामीण क्षेत्र व शहरी क्षेत्र के बालिकाओं की अपेक्षा निर्णय क्षमता अधिक पायी गयी किन्तु अधिक अन्तर नहीं होने के कारण शून्य परिकल्पना ग्रामीण क्षेत्र व शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के बालकों व बालिकाओं में निर्णय क्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। को स्वीकृत किया जाता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि ग्रामीण क्षेत्र व शहरी क्षेत्र के बालकों की निर्णय क्षमता और ग्रामीण क्षेत्र व शहरी क्षेत्र की बालिकाओं की निर्णय क्षमता में कोई अन्तर नहीं है।

विवेचना

ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों में निर्णय क्षमता व समायोजन क्षमता में उच्च धनात्मक सह या गया। अर्थात ग्रामीणसम्बन्ध पा-क्षेत्र के जिन विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता उच्च होती है उन विद्यार्थियों की निर्णय क्षमता भी उच्च होती है। जो विद्यार्थी परिवार, विद्यालय, समाज व सांवेगिक परिवर्तन में स्वयं को समायोजित करने में सफल हो पाते हैं वो विद्यार्थी अपने सफल भविष्य हेतु निर्णय लेने की क्षमता भी रखते हैं।

निष्कर्ष

ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों में निर्णय क्षमता व समायोजन क्षमता में उच्च धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया। अतः ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक - में कोई स्तर के विद्यार्थियों में निर्णय क्षमता व समायोजन क्षमता सम्बन-सार्थक सह्ध नहीं है, परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. भटनागर, सुरे, शिक्षा मनोविज्ञान, आर लाल बुक डिपो, मरेठ 1992
2. अग्रवाल, जे.सी ., एजुकेशन रिसर्च एन इन्ट्रोडक्शन, आर्य बुक डिपो, न्यू दिल्ली 1996
3. एममंगल .के ., शुभ्रा मंगल, व्यवहारिक विज्ञानों में अनुसंधान विधिया
4. अस्थाना एवं श्रीवास्तव, विपिन एवं विजया, शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी
5. पीपाठक एव ंसंशोधनकर्ता सुश्री संगीता चैहान .डी ., शिक्षा मनोविज्ञान, श्रीविनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।
6. सक्सेना एम).1980) ने "बच्चों मे निर्णय क्षमता व समस्या समाधान व्यूह रचनाओं का अध्ययन।
7. Fourth survey of research in Education, NCERT New Dehli, 1 March 1975
8. सिंह मीता)2015) ने प्रथम पीढी की सामान्य वर्ग कीे मुस्लिम महिलाओं के शैक्षिक स्तर व निर्णय क्षमता का सहसम्बन्ध।
9. Bhartiyam International journal, Dec.2015, Vol. 5, Issue 1, Page No. 15.22
10. कान्त, रामकुमार)2011) "किशोरों की समय प्रबंधन दक्षताका उनके समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।"
11. जैननिशा)2014) ने उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के तनाव व समायोजन में संबंध का अध्ययन।
12. Time Tracks Journal November 2014, Vol. 1, Issue 2
13. मिश्रा शालिनी)2009) ने महाविद्यालय कि 18-22 आयुवर्ग की बालिकाओं मे सवेंगात्मक परिपक्वता व समायोजन स्तर का अध्ययन।